ISSN:2583-8849

मीराबाई

1-

हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि, धर्यो आप सरीर।
बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर॥

2-

स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाला म्हाँने चाकर राखोजी।
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।
बिन्दरावन री कुंज गली में, गोविन्द लीला गास्यूँ।
चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।
मोर मुगट पीताम्बर सौहे, गल वैजन्ती माला।
बिन्दरावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला।
ऊँचा ऊँचा महल बणावं बिच बिच राखूँ बारी।
साँवरिया रा दरसण पास्यूँ, पहर कुसुम्बी साड़ी।
आधी रात प्रभु दरसण, दीज्यो जमनाजी रे तीरां।
मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर, हिवड़ो घणो अधीराँ॥

3-

जागो बंसीवारे ललना!
जागो मोरे प्यारे!
रजनी बीती, भोर भयो है, घर-घर खुले किंवारे।
गोपी दही मथत, सुनियत हैं कंगना के झनकारे॥
उठो लालजी! भोर भयो है, सुर-नर ठाढ़े द्वारे।
ग्वाल-बाल सब करत कुलाहल, जय-जय सबद उचारै॥
माखन-रोटी हाथ मँह लीनी, गउवन के रखवारे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सरण आयाँ को तारै॥

4-

बरसे बदरिया सावन की।
सावन की मन-भावन की॥
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की।
उमड़-घुमड़ चहुँदिस से आया, दामिन दमकै झर लावन की॥
नन्हीं-नन्हीं बूँदन मेहा बरसे, शीतल पवन सुहावन की।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर! आनंद-मंगल गावन की॥

5-

श्री गिरधर आगे नाचूँगी।
नाच-नाच पिव रसिक रिझाऊँ, प्रेमी जन को जाचूँगी।
प्रेम-प्रीत के बाँध घूँघरू, सुरत की कछनी काछूँगी॥
लोक-लाज कुल की मरजादा, या मैं एक न राखूँगी।
पिया के पलंगा जा पौढूँगी, मीरां हरि रंग राचूँगी॥

6-

जोगी मत जा मत जा मत जा, पाइं परूँ मैं चेरी तेरी हौं।
प्रेम भगति कौ पैड़ो ही न्यारो हम कूँ डौल बता जा।
अगर चंदण की चिता बनाऊँ अपणे हाथ जला जा॥
जल बल भई भस्म की ढेरी अपणे अंग लगा जा।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर जोत में जोत मिला जा॥

7-

बादल देख डरी हो, स्याम! मैं बादल देख डरी।
काली-पीली घटा ऊमड़ी बरस्यौ एक घरी।
जित जाऊँ तित पाणी पाणी हुई सब भूम हरी॥
जाका पिय परदेस बसत है भीजूं बाहर खरी।
मीरा के प्रभु हरि अबिनासी कीजो प्रीत खरी॥